

* श्रीः *

काशी माहात्म्य

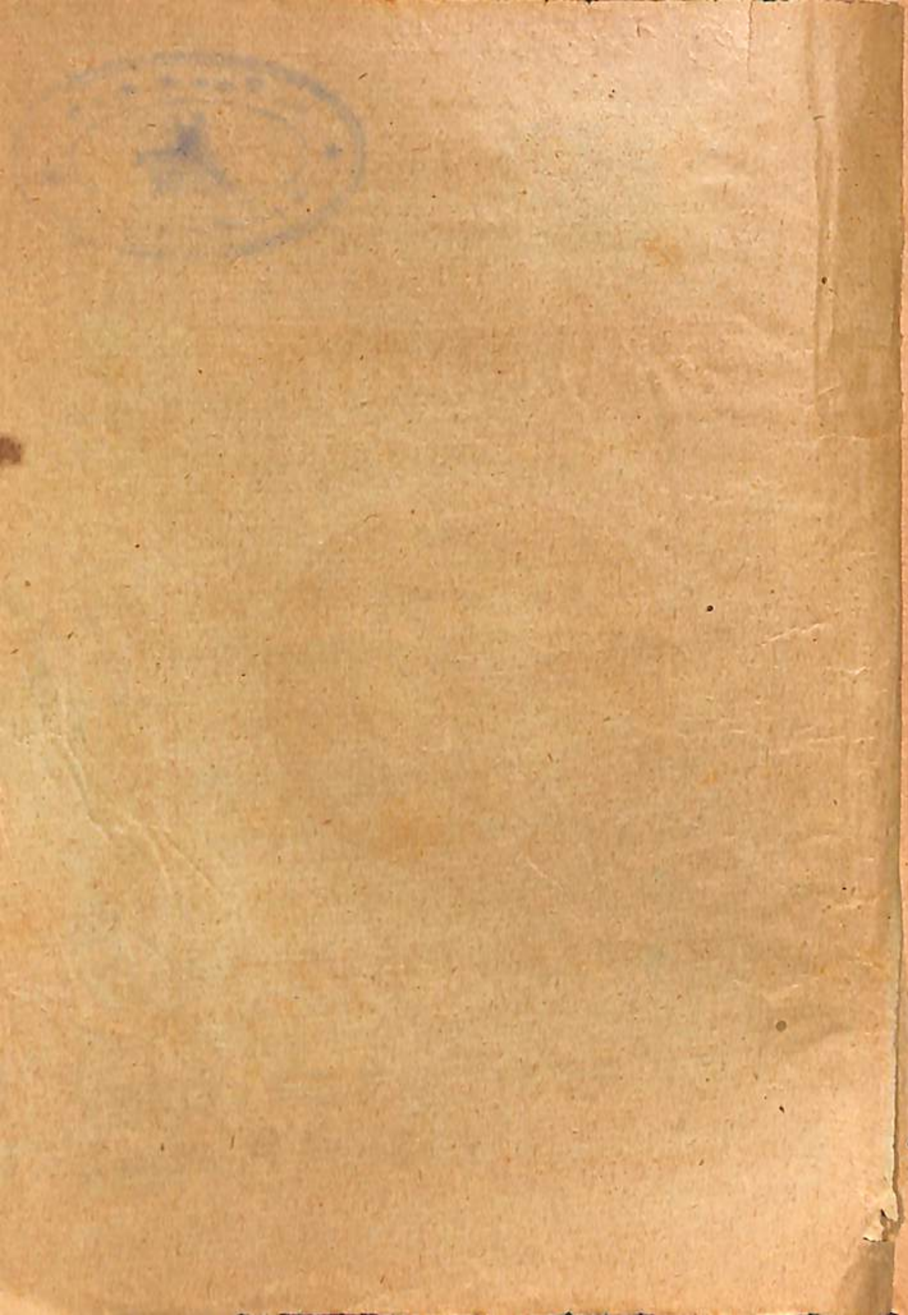
पंचक्रोशी यात्रा सहित।



प्रकाशकः—

स्टार आफ इण्डिया प्रेस बनारस।

मूल्य -)



* श्रीः *

ओं नमः शिवाय ।



* श्री काशी माहात्म्य भाषा *



एक समय नर्मदा नदी के तट पर आनन्द पूर्वक बैठे हुए भृगु मुनि से लोमशादि ऋषियों ने श्री काशी क्षेत्र का माहात्म्य पूछा, तब सहर्ष भृगु-मुनि ने वर्णन किया हे मुनि श्रेष्ठ ! श्री काशी यह धाम अति उत्तम है कि यहाँ पर श्री बिश्वनाथ जी के प्रभावसे काशी जी में पापात्मा कोई भी जीव शरीर को त्यागता है उसको निसन्देह मुक्ति पदवी प्राप्त होती है । काशी यह शब्द उच्चारण करने वाले पुरुष के पापरूपी पहाड़ नाश होकर ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान के प्राप्त होने से उसे मोक्ष अवश्य मिलता है धन्य हैं वह पुरुष जो निरन्तर काशीधाम में बास करते हैं। हे मुनि ! काशीपुरी का माहात्म्य मैं कहां तक वर्णन करूँ कि सतयुग में

अति शूरवीर भूरिद्युम्न नामक राजा राज्य करता था कि जिसकी सहस्रों रानियों में विभावरी नाम मुख्य रानी थी दैववश कामदेव के वशीभूत होने के कारण समस्त राज्य को शत्रुओं ने निज बस में कर लिया और राजा भूरिद्युम्न विभावरी रानी को साथ लेकर तरवार लिये भयानक विन्ध्य पर्वत पर चला गया। कुछ समय के बाद एक दिन राजा और रानी की परस्पर वार्त्तालाप में रानी ने कहा कि हे राजन्! आप कामदेवके बस होकर निज राज्य और अन्य स्त्रियों को खो दिया अब हम और आप से इस निर्जन बन में कैसे रहा जायगा जिस पुरुषने धर्म अर्थ को त्याग कर काम ही के बस में रहता है उसकी आपही की सी गति हो जाती है। बाद वह राजा रानी क्षुधा पियास से व्याकुल हो निज कर्म का स्मरण करता हुआ घूमने लगा, एक रोज क्षुधा से पीड़ित राजा के मन में यह पाप आया कि मैं निज रानी को ही मारकर खा जाऊँ। रानी को यह

बात मालुम हुई तो रानी ने कहा कि हे महाराज ! आप का मुखकमल क्षुधा से पीड़ित है अब मेरे शरीर से आप मांस निकाल कर भोजन कीजिये और निज प्राणों को बचाइये। यह नीति के बचन सुन कर उस घोर पापी राजाने रानीको मार कर ज्यों ही मांस खाने बैठा त्योंही दो सिंह आपस में खेलते हुए वहाँ पर आये सिंह को देख कर वह राजा भाग खड़ा हुआ, और चार कोशकी दूरी पर धान के बोझा को लिये हुए चार ब्राह्मणों को देख कर राजा ने उन्हें मार कर धान खाने को ज्योंही उद्यत हुआ त्योंही यज्ञोपवीत और मृगचर्म को देखा तो राजाको दैववश ज्ञान हुआ कि मैंने निज कुबुद्धि से स्त्री और ब्राह्मणों को मारा एक ब्रह्म-हत्या से मनुष्य सौ कल्प नर्क में वास करता है और स्त्री के बध से उक्त पचास कल्प। कहो ! मैंने महा भारी घोर पाप किया यह बिचार करता हुआ राजा भूरिद्युम्न सालंकायनु मुनि के स्थान में आकर सम-

स्त निज कथा को कह सुनाया और प्रायश्चित्त पूछा तब दया भाव से मुनि ने कहा अरे दुष्ट ! अब तू काशी को जा, इसके निश्चय करने के लिये पाँच काले कपड़े तू पहन ले सो काशी के दर्शनमात्र से सब सफेद हो जायँगे । यह सुन भूरिद्युम्न सात दिन में चलकर समस्त जीवों के भ्रम को नाश करने वाले काशी में पहुँचा, सो श्री काशी दर्शन मात्र से उसके पाँचो कपड़े शरदऋतु के सदृश ज्वाला चन्द्रवत् सफेद हो गये, और यह घोर पापी काशी में नित्य श्री गंगास्नान और श्री बिश्वेश्वर का दर्शन पूजन करने लगा सदैव "शिव शिव तथा हरहर महादेव शम्भो काशी बिश्वनाथ गंगा ,, ऐसा मंत्र उच्चारण करके श्री बिश्वनाथ मणिकर्णिका के दर्शन पूजन करने से और तारकमंत्र के प्रभाव से इस क्षेत्रमें शिव सारूपमुक्ति को प्राप्त हुआ । इससे हे मुनिवर्य ! काशी में किसी जगह कैसाही घोर पापी शरीर त्यागता है उसे अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है तो धर्मा-

त्माओं की गति को कहना ही क्या है।

इति प्रथमोऽध्यायः।

हे लोमशादि मुनियो ! एक समय कुरुक्षेत्र में भालकमुनि के कृश नामक पुत्र था उसको पिङ्गलमुनी और भालक मुनि ने अनेक भाँति से शिक्षा दिया परन्तु उस पापी को कुछ भी ज्ञान न प्राप्त हुआ और युवावस्था के प्राप्त होतेही निज सौतेली माता को और गुरू के स्त्री को लेकर मथुरा में आय चोरी से निज जीविका को करता हुआ उक्त स्त्रियों में विहार करने लगा कामान्ध मदिरा से उन्मत्त बारह बरस माता और गुरुपत्नी के संग बिहार किया बाद कालबस उक्त स्त्रियाँ मरगईं और वह दुखी कृश सुकर्मा जंगल में घूमने लगा और कुछ काल के बाद काशी काशी यह शब्द उच्चारण के प्रभाव से शंकर के दूतों ने यमदूतों को मारकर कैलास में स्थिर किया और उसे कैलासवास दिया। शिवजी का भक्त विष्णुभक्त तीर्थसेवी,काशीवासी मरनेके समय

काशी शब्द उच्चारण करने वाले के घोर से घोर पाप नाश होकर उसे उत्तम गति प्राप्त होती है।

इति द्वितीयोऽध्यायः।

भृगु मुनिने कहा कि हे ऋषियो! जिस काशी में पतितोद्धारिणी श्रीगङ्गाजी और मणिकर्णिका कुंड श्री साक्षात आदि शिवलिंग विश्वनाथजी बिराजमान हैं उस काशी के माहात्म्य को मैं क्या कह सक्ता हूं जिस पुरुष ने काशी में बास करके कोई पाप कर्म किया उसको तीस हजार वर्ष रुद्रपिशाच होना पड़ता है इसलिये काशी में रहकर सदैव धर्म का आचरण करै श्री बिश्वनाथ जी काशी में रहते हुए समस्त जीवोंको तारक मन्त्रका उपदेश करते हैं जिसके प्रताप से वह अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त होता है। एक समय सरस्वती नदी के किनारे बशिष्ठ जी के पास बामदेव मुनि आति और परस्पर बार्तालाप होते हुए श्री काशीधाम के माहात्म्य को बामदेव ने वर्णन किया कि हे तपोधन! श्री बिश्वनाथ

जी का क्षेत्र जो कि काशी पुरी है इसमें पापी और पुण्यात्माओं को श्रीशिवजी समगति देते हैं और आप सदैव काशी में बास करते हैं यह बाराणसी शंकर का आनन्दबन है यद्यपि पृथ्वी में अनेकों ही तीर्थ हैं परन्तु परलोक सुधारने के लिये काशी है। यहां के पुण्य का प्रभाव अनन्त हैं जो कोई यहाँ पर एक वर्ष एक भी ब्राह्मण को बराबर भोजन देता है उसको गंगाजी की जितनी बालुकायें हैं उतने वर्ष भोजन देने का फल प्राप्त होता है। जो पुरुष काशी में सदैव बास करते हैं वे शिवसमान हैं। इस भांति बशिष्ठ और बामदेव की वार्ता होकर दोनों ही ऋषिवर्य काशी को चल दिये। काशी के निकट आते ही जंगल में बिकरालोन्मालि राक्षस के बंश के अनेक निशाचर अस्त्र शस्त्र लिये देख पड़े और उक्त राक्षसों का स्वामी हुंडक नामक राक्षस ने बशिष्ठ और बामदेव से वार्तालाप करके कहा कि हे राक्षस बीरो इन दोनों पुरुषों को शीघ्र मार डालो इन्हीं बशिष्ठ के पुत्र

पराशर ने राक्षसघात नामक यज्ञ करके सकुटुम्ब हमारे पिताको मार डाला है। यह आज्ञा पाय ज्योंहीं निशाचर लोग दौड़े त्योंहीं श्रीशंकरजी क्रोध करके निज तीसरा नेत्र खोल कर राक्षसों को भस्म करके बशिष्ठ और बामदेवजी का संकट छुड़ाय अन्तर्ध्यान होगये और वे दोनों मुनि काशी में जाय तीस हजार वर्ष तक तपस्या करके शंकरजी को प्रसन्न किया। और बिश्वनाथ जी से निरन्तर काशीबास करने का बर पाय निवास करने लगे। जो कोई यात्री उन मुनियों के स्थान पर जाय दर्शन करेंगे और इस कथा को सुनेंगे तो उसके काशीबास करने के जितने विघ्न हैं वे सब नाश हो जावेंगे।

इति तृतीयोऽध्यायः।

भृगु मुनि ने कहा काशी में पापी पुरुष के मरने पर उसके मालिक यमराज नहीं होते। परन्तु उसका कालभैरो दण्ड अवश्यही देते हैं। काशी में एक कमेलक नामक शूद्र, काशीखंड के अनुसार

नित्यही स्नान दान यात्रादि करता था। उसके यहाँ क्षुधा से ब्याकुल भृगुरि नामक ब्राह्मण आ मांगने लगा दैववश पूर्व जन्म कृत पापके प्रभाव से क्रमेलक ने ब्राह्मण को मारकर महल से निकाल दिया कुछ समय के बाद जब वह क्रमेलक मरा तो उसे कालभैरो के दूतों ने क्रम से एक हजार वर्ष पिशाच योनि में रखकर तारक मंत्रके प्रभाव से अन्त में उसे मोक्ष दिया। काशी में पापकर्म करने वाले को अयोनिज जन्म लेकर पाप भोग करे तब मुक्ति मिलती है। इस लिये भूल कर भी काशी में मनुष्य पाप न करे। सामान्य पाप किसी कारण बस यदि मनुष्य से हो भी जाय तो नित्यही गंगा मणिकर्णिका स्नान विश्वनाथ दर्शन पूजन अन्तरगृही और पंचकोशी यात्रा से छूट जाते हैं, एक समय सुपर्वा नामक राजा घोड़े पर सवार होकर शिकार करता हुआ स्त्रीगणों से युक्त एक तालाबके पास आया एक स्त्री से बार्तालाप किया और बिदित हुआ कि राजा बिशाल ने निज कन्या

का काशी बासी राजा कुण्डधर के द्रोह से बिवाहही करना नहीं स्वीकार किया यह बात जानकर व रूपवती कन्याको देख कर राजा बिशालके पास गया, बिशाल राजा से कन्याको मांगा राजा ने कहा कि मेरे बैरी काशी में राजा कुण्डधर हैं उनको आप जीतिये तो हम कन्या काशीही में दे देवेंगे यह सुन राजा सुपर्वा ने मंत्री प्रियाश्व को संग लेकर चतुरंगिणी सेना समेत कुण्डधर राजा से काशी में जाकर संग्राम किया। उस समय आकाशमें देवांगना और अप्सरायें लाशों को उठा कर बैकुण्ठ ले जाने के लिये आईं परन्तु बृहस्पति ने उनको रोका कि काशी में मरने वालों को मोक्ष मिलता है वह साक्षात् शिव स्वरूप हो जाता है, तुम्हारा यह यत्न व्यर्थ होगा यह बृहस्पति ने कह सबको समझा दिया और राजा सुपर्वा ने कुंडधर को संग्राम में जीत लिया राजा बिशालने सुपर्वा को काशीका तिलक करके निज चन्द्रिका नामक कन्या को शास्त्रानुसार बिवाह दिया इस पुनीत पुरी काशी

के दरिद्र पुरुष से बढ़कर अन्य देशों का राजाभी नहीं है। सो कथा हे मुनिवर! मैंने आपसे बर्णन किया।

एक समय याज्ञवल्क्य और जनक का सम्बाद हुआ तो याज्ञवल्क्य ने कहा कि आशुतोष श्री विश्वनाथ जी की काशीपुरी में जो शरीर को त्यागता है उसे निश्चय ही मोक्ष मिलता है। काशी में ब्रह्म-स्वरूप हजारहों लिङ्ग हैं तिन में ज्योतिर्लिङ्ग श्री विश्वनाथजी का है कि जिसके दर्शन से सहज ही में मोक्ष होता है। ज्ञानवापी के जल सेवन से दिव्य दृष्टि होती है। किसी समय में श्वेत देशका राजा एक हजार वर्ष तप करके शंकर जी के भेजे हुए दुर्वासा ऋषि द्वारा काशी में यज्ञ किया था ऐसी यह पुनीत पुरी है। काशी ही में ब्रह्मा ने दशाश्वमेध यज्ञ किया था और शंकर से अनेक वार्तालाप ब्रह्मा ने किया कि, धन्य है काशी और काशीवासी और काशी में प्राण त्यागने वाले। काशी में आकर कामादि अनर्थों से खूबही बचा रहे। एक समय नार-

दजी मरुत की यज्ञ में काशी माहात्म्य को सुन कर आश्चर्यित हो सूर्य नारायण से काशी माहात्म्य पूछा सूर्य्यनारायन भगवान ने कहा कि हे नारद ! जो तुमने यज्ञ में सुना है वही सत्य है, सर्वत्र तो मनुष्यके कर्म सहायक होता है परन्तु काशी में मरने के वक्त काशी यह दो अत्तर सहायक होकर पापी और पुण्यात्मा को तारकमंत्र द्वारा मोत्त मिलता है केवल पापी को भैरवी यातना भोगना पड़ता है। परन्तु वह नर्क द्वार में नहीं जाता है। इसी भांति नारद को सूर्य भगवान ने समझाया। वो प्रसन्न होकर निज कार्य्य को चले गये।

इति चतुर्थोऽध्यायः ।

हे महर्षि ! एक समय शिवभक्त काशी में सुनन्दन नामक राजाकी बिश्वजितयज्ञ में सनत्कुमारजी आकर काशीजी का माहात्म्य बर्णन किया कि जमुनातट पर मौन नामक मुनि के मान्डव्य और मुग्दल नामक शिष्य थे उन शिष्यों में मान्डव्य बलि राजा

की यज्ञ में गये और यज्ञ पूर्ण होकर काशीजी का माहात्म्य सुनाकर बलि राजा के साथ माण्डव्य काशीजी को आये। इतनेही के अन्दर में मौन ऋषि भी काशी में आते थे सो माण्डव्य और बलि ने मौन को देखकर पूजन करके मणिकर्णिका में स्नान कर श्री बिश्वनाथ का दर्शन करके काशी माहात्म्य पूछा तो मौन मुनि ने भली भाँति मोक्ष पद शिवजीका माहात्म्य वर्णन किया कि बलि जो पुरुष काशी में धर्म करता हुआ सदैव बास करता है उसको मोक्ष अवश्यही मिलता है और जो कोई पाप कर्म करता है उसको अवश्यही भैरवी यातना भोगना पड़ता है यह कथा सुनकर बलिने शिव मूर्तिकी स्थापना काशीमें करके निज राज्यको चले गये। श्री काशीजी में दिवोदास नामक राजा अपुत्र था, सो तारा रानी के साथ पुत्र अर्थ निकुम्भ महाराज की एक वर्ष सेवा किया परन्तु पुत्र न मिलने से क्रोध कर निकुम्भ जी का मन्दिर तोड़वा डाला,

तो निकुम्भ ने शाप दे दिया कि तेरे इस अन्याय से काशी एक हजार बर्ष शून्य रहेगी प्रातः होतेही दिवोदास को मारने के लिये ताल जंघा नामक राजा आये बाद घोर संग्राम होने से दिवोदास को मार कर भरद्वाज के आश्रम को चला गया और उक्त दोनों राजाओं ने काशीको शून्य कर दिया राजा दिवोदास ने भरद्वाज से समस्त कथा कही तब भरद्वाज ने काशी माहात्म्य वर्णन करके राजा को पुत्रेष्टि यज्ञ करा प्रतर्दन नामक पुत्र उत्पन्न कराया कि जिससे हैहय और तालजंघा राजा मारेगये और एक हजार बर्ष काशी शून्य रही । बाद दिवोदास काशी में क्रिया पूर्वक वास किया तब मोक्ष को प्राप्त हुआ।

इति पंचमोऽध्यायः।

समाप्तः।

स्टार आफ इण्डिया प्रेस, पांडे हौली, बनारस सिटी।

पंचकोशीयात्रा।

यह यात्रा साल में दो बार करनी चाहिए, इस यात्रा से काशी में किया हुआ पाप नष्ट होता है और काशीवास का पूरा फल मिलता है।

मणिकर्णिकायै नमः।
मणिकर्णिकेश्वरायनमः।
सिद्धिविनायकायनमः। महाल मणिकर्णिका घाट।
गंगा केशवायनमः म॰ललिताघाट
ललितादेव्यै नमः तत्रैव।
जरासिंधेश्वरायनमः म॰मीरघाट
सोमेश्वरायनमः म॰ मानमन्दिर
दालभ्येश्वरायनम म॰ तत्रैव।
शूलटंकेश्वरायनमः दशाश्वमेध।
आदिवाराहेश्वरायनमः म॰ तत्रैव
दशाश्वमेधेश्वरायनमः म॰ तत्रैव
वन्दिदेव्यै नमः म॰ तत्रैव।
सर्वेश्वरायनमः म॰ पांड़ेघाट।
केदारेश्वरायनमः म॰ केदारघाट।
हनुमदीश्वरायनमःम॰हनुमानघाट
लोलार्कायनमः म॰ भदैनी।
अर्कविनायकायनमः म॰ तत्रैव।
संगमेश्वरायनमः म॰ असीसंगम
दुर्गाकुंडायनमःप्रथमनिवासस्थान
दुर्गाविनायकायनमः।
दुर्गादेव्यैनमः म॰ तत्रैव।
विश्वक्सेनेश्वरायनमः म॰मार्ग में
कर्दमेश्वरायनमःद्वितीयनिवासस्थान
कर्दमतीर्थायनमः म॰ तत्रैव।
कर्दमकूपायनमः म॰ तत्रैव।
सोमनाथायनमः म॰ तत्रैव।
विरूपाक्षायनमः म॰ अग्रे।

नीलकंठायनमः म॰ अग्रे।
नागनाथायनमः म॰ अग्रे।
चामुण्डायैनमः म॰ अग्रे।
मोक्षकेश्वरायनमः म॰ गांव में।
करुणेश्वरायनमः म॰ तत्रैव।
वीरभद्रेश्वरायनमः म॰अग्रगांवमें
विकटाक्षदुर्गायैनमः म॰ तत्रैव।
उन्मत्तभैरवायनमः म॰ अग्रगांव
नीलवर्णायनमः म॰ तत्रैव।
कालकूटायनमः म॰ तत्रैव।
विमलदुर्गायै नमः म॰ अग्रे।
महादेवायनमः म॰ अग्रे।
नन्दिकेशगणायनमः म॰ अग्रे।
भृगिरीठगणायनमः म॰ अग्रे।
गणप्रियायनमः म॰ तत्रैव।
विरूपाक्षायनमः म॰ गौरगांव।
यक्षेश्वरायनमः।
विमलेश्वरायनमः।
ज्ञानदेवेश्वरायनमः।
अमृतेश्वरायनमः।
गन्धर्वसागरायनमः भीमचंडी।
भीमचंडीदेव्यैनमः तत्रैव।
चंडिनायकायनमः।
रविरक्ताक्षगंधर्वायनमः तत्रैव।
नरकार्णवतारकशिवायनमःतत्रैव
एकपादगणायनमः।
महाभीमायनमः आगे तलावपर।

भैरवायनमः आगे गाँव में ।
भैरवबेदव्यासायनमः म० स्तोत्र,
भूतनाशायनमः अग्रे ।
सोमेश्वरायनमः ।
सिन्धुसागरायनमः प्रसिद्धम् ।
कालनाथायनमः डौसा गाँव में ।
कपर्दीश्वरायनमः अग्रे ।
कामेश्वरायनमः अग्रे ।
गणेश्वरायनमः अग्रे ।
वीरभद्रायनमः चौखंडी गांव में ।
चारुमुखायनमः तत्रैव ।
गणनाथायनमः चौखंडीग्राम ।
देहली विनायकायनमः प्रसिद्ध ।
षोडशविनायकायनम तत्रैव ।
उद्दंडविनायकायनमः तत्रैव ।
उत्कलेश्वरायनमः तत्रव ।
रुद्राण्येनमः तत्रैव अग्रे ।
तपोभूम्यैनमः अग्रे ।
वरुणातीर्थायनमः रामेश्वर गाँवमें
रामेश्वरायनमः म० तत्रैव ।
सोमेश्वरायनमः तत्रैव ।
भरतेश्वरायनमः तत्रैव ।
लक्ष्मणेश्वरायनमः तत्रैव ।
शत्रुघ्नेश्वरायनमः तत्रैव ।
नहुषेश्वरायनमः तत्रैव ।
द्यावाभूमिश्वरायनमः तत्रैव ।
असंख्याततीर्थेभ्योनमः वरुणापर
असंख्याततीर्थेभ्योनमः तत्रैव ।

देवसंघेश्वरायनमः कामोरा गाँव
पाशपाणिविनायकायनमः लैनमें ।
पृथ्वीश्वरायनमः खजुरी गांवमें ।
स्वर्गभूम्यैनम, तत्रैव ।
यूपसरावणायनमः दीनदयालपुर
वृषभध्वजतीर्थायनमः कपिलधारा
वृषभध्वजायनमः तत्रैव ।
ज्वालानृसिंहायनमः कुटुवागांव ।
संगमेश्वरायनमः तत्रैव ।
सर्वविनायकायनमः तत्रैव ।
आदिकेशवायनमः तत्रैव ।
प्रह्लादेश्वराय नमः प्रहलादघाट
त्रिलोचनेश्वरायनमः त्रिलोचनघाट
पञ्चगंगायनमः प्रसिद्धम् ।
बिन्दुमाधवाय नमः प्रसिद्धम् ।
वसिष्ठवामदेवाभ्यांनमः संकठाघाट
पर्वतेश्वरायनमः तत्रैव ।
महेश्वराय नमः मणिकर्णिका ।
सप्तावरणविनायकायनमः ब्रह्मनाल
षटपंचाशद्विनायकेभ्योनमःतत्रैव
मणिकर्णिकायैनमः प्रसिद्धम् ।
विश्वेश्वरायनमः प्रसिद्धम् ।
मुक्तिमंडपायनमः प्रसिद्धम् ।
दंडपाणये नमः ।
ढूंढिराजायनमः ।
भैरवायनमः ।
आदित्यायनमः ।
मोदादि पंच विनायकेभ्योनमः

इति पंचक्रोशी यात्रा सम्पूर्णम् ।

स्टार आफ इण्डिया प्रेस, पांड़े हौली, बनारस सिटी ।